

## ॥ मूकपञ्चशती ॥

### ॥ आर्याशतकम् ॥

कारण-पर-चिद्रूपा काञ्चीपुर-सीम्नि कामपीठगता।  
काचन विहरति करुणा काश्मीर-स्तवक-कोमलाङ्गलता ॥ १ ॥

कञ्चन काञ्ची-निलयं करधृत-कोदण्ड-बाण-सृणि-पाशम्।  
कठिन-स्तनभर-नम्रं कैवल्यानन्द-कन्दम् अवलम्बे ॥ २ ॥

चिन्तित-फल-परिपोषण-चिन्तामणिरेव काञ्चिनिलया मे।  
चिरतर-सुचरित-सुलभा चित्तं शिशिरयतु चित्सुखाधारा ॥ ३ ॥

कुटिलकचं कठिनकुचं कुन्दस्मित-कान्ति कुङ्कुमच्छायम्।  
कुरुते विहृतिं काञ्च्यां कुलपर्वत-सार्वभौम-सर्वस्वम् ॥ ४ ॥

पञ्चशर-शास्त्रबोधन-परमाचार्येण दृष्टिपातेन।  
काञ्चीसीम्नि कुमारी काचन मोहयति कामजेतारम् ॥ ५ ॥

परया काञ्चीपुरया पर्वत-पर्याय-पीनकुच-भरया।  
परतन्त्रा वयमनया पङ्कज-सब्रह्मचारि-लोचनया ॥ ६ ॥

ऐश्वर्यमिन्दुमौलेः ऐकात्म्य-प्रकृति काञ्चिमध्यगतम्।  
ऐन्दव-किशोर-शेखरम् ऐदम्पर्यं चकास्ति निगमानाम् ॥ ७ ॥

श्रितकम्पा-सीमानं शिथिलित-परमशिव-धैर्य-महिमानम्।  
कलये पाटलिमानं कञ्चन कञ्चुकित-भुवन-भूमानम् ॥ ८ ॥

आदृत-काञ्चीनिलयाम् आद्याम् आरूढ-यौवनाटोपाम्।  
आगम-वतंस-कलिकाम् आनन्दाद्वैत-कन्दलीं वन्दे ॥ ९ ॥

तुङ्गाभिराम-कुचभर-शृङ्गारितम् आश्रयामि काञ्चिगतम्।  
 गङ्गाधर-परतन्त्रं शृङ्गाराद्वैत-तन्त्र-सिद्धान्तम् ॥ १० ॥

---

This stotra can be accessed in multiple scripts at:  
[http://stotrasamhita.net/wiki/Muka\\_Pancha\\_Shati\\_10](http://stotrasamhita.net/wiki/Muka_Pancha_Shati_10).

 generated on **April 14, 2025**

Downloaded from  <http://stotrasamhita.github.io> |  StotraSamhita | [Credits](#)